1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।

अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 40, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 दिसम्बर, 2016 से रविवार 18 दिसम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

प्रेरक जीवन के धनी–स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महेश विद्यालंकार

.....इतिहास साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द ही ऐसे महापुरुष थे कि जिन्हें जामा मस्जिद से हिन्दू-मुस्लिम एकता के भाषण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके एकता के प्रयास सदा स्मरणीय रहेंगे। चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गोरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना-चलाओ मेरे सीने पर गोलियां। स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त ही कह सकता है।.......

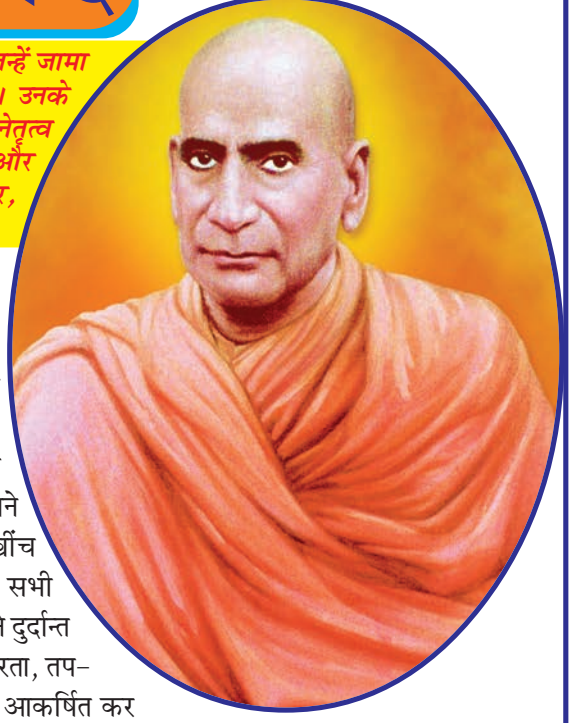

हमारे देश को महापुरुषों की लम्बी परम्परा प्राप्त रही है। जिन्होंने देश- धर्म -जाति व संस्कृत की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इसी बलिदानी परम्परा में स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान और कार्यों को देश श्रद्धा व सम्मान से स्मरण करता है। वे श्रद्धा, त्याग, दृढ़ता और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्त्व सराहनीय था। उनकी तप-त्याग तपस्या, सेवा, श्रद्धा, वीरता, दृढ़ता राष्ट्र प्रेम आदि वन्दनीय है। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य प्रशंसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है। उनका जीवन-चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मुक्ति स्मरणीय है। उनकी देश-धर्म जाति की सेवा श्लांघनीय है। उनका सर्वस्व समर्पण आदरणीय है। उनका संगीनों के समाने सीना खोलकर खड़े हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

जब इस महापुरुष के पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र बनता है जिसमें कई बुराईयां थीं। नास्तिकता, खान-पान की अपवित्रता, आचरण की मलीनता और भोग- विलासमय जीवन जीने वाला। धर्म-कर्म, ईश्वर भक्ति, परोपकार आदि से दूर रहने वाला। धर्म-कर्म, ईश्वर भक्ति, परोपकार आदि से दूर रहने वाला। जब ऋषिवर दयानन्द के चुम्बकीय व्यक्तित्व और अगाध ज्ञान का स्पर्श हुआ तो ज्ञान-चक्षु खुल गए। कायाकल्प हो गया। जीवन की दिशा बदल गई। जीवन का सारा रंग-ढंग ही बदल गया। मुन्शीराम पर प्रभु कृपा हुई। वे पतित जीवन से उठकर प्रेरक जीवन की ओर चल पड़े। आस्तिकता के सुप्त संस्कार जाग उठे। यह तभी संभव हुआ जब उनके हृदय में सत्य, श्रद्धा, विवेक, आस्तिकता आदि भाव आए। यदि हम सीखना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

हमारे जीवनों में अनेक दुर्गुण, दुर्व्यसन व बुराईयां घर किए बैठी हैं। जो दिन-रात खोखला कर रही हैं। हम अपने सत्य स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। इतना सुनने, पढ़ने और देखने के बाद भी हमारा सुधार नहीं हो पा रहा है। क्योंकि हमारे अन्दर छोड़ो का संकल्प, व्रत व दृढ़ता नहीं है। जब मुन्शीराम श्रद्धानन्द बन सकते है। तो हम क्यों नहीं ऊपर उठ सकते हैं? बात कहने की नहीं करने की है। वे वाक्शूर नहीं, कर्मशूर थे। जो कहा उसे कर दिखाया। उनके जीवन का, कथनी करनी का, पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, नास्तिकता से आस्तिकता की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ऐसा व्रती संकल्पी कर्मठ चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है जो इतने पतन से इतना ऊंचा उठा हो, जिसने इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी हो। जिसने ऊंचाई की सभी बुलन्दियां छू ली हों। जिसने दुर्दान्त डाकुओं को भी साहस-वीरता, तप-त्याग आदि में अपनी ओर आकर्षित कर लिया हो। जो हिंसक जन्तुओं को भी अपने सान्निध्य में बैठाने का साहस रखता हो।

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषि ने जो आदर्श, मन्तव्य, सिद्धान्त, विचार आदि दिए, उन्हें इस महापुरुष ने क्रियात्मक साकार रूप दिया। इनका जीवन संघर्षो, कठिनाइयों व चुनौतियों से निकला। किन्तु उस महापुरुष ने चरैवैति-चरैवैति का मूल मन्त्र कभी नहीं छोड़ा। अपने गुरु का मान बढ़ाया। वैदिक विचार धारा को यश दिलाया। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करना, उस समय शिक्षा के क्षेत्र में महान क्रांन्ति थी। उनकी यह कल्पना ऋषि की शिक्षा पद्धति पर आधारित थी। जिस गुरुकुल का उद्देश्य था वैदिक ज्ञान-विज्ञान, आदर्शो, मानवता और सद्चरित्र वाले देश को नागरिक प्रदान करना। गुरुकुल के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इस संस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द का स्मारक है। किन्तु आज वह स्मारक ढह रहा है। हम बेखबर हैं। इतिहास साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द ही ऐसे महापुरुष थे कि जिन्हें जामामस्जिद से हिन्दू-मुस्लिम

– शेष पृष्ठ 3 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 18 दिसम्बर, 2016 दोपहर 2 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक रविवार 18 दिसम्बर, 2016 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में दोपहर 2 बजे आयोजित की गई है। सभा के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें। *– महामन्त्री*

लो फिर आ गया विश्व पुस्तक मेला : 7 से 15 जनवरी, 2017
आर्यसमाज बढ़-चढ़ कर करेगा वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

10/- रु. में उपलब्ध होगा 'सत्यार्थ प्रकाश' : 20/- प्रति सहयोग की अपील

सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य 50/- है। इसे 20/- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से तथा 20/-रुपये प्रति पुस्तक दानी महानुभावों एवं आर्यसमाजों से सहयोग प्राप्त करके ही मात्र 10/- रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सबसे से निवेदन है कि महर्षि दयानन्द के अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को जन-सामान्य तक अल्प मूल्य पर पहुंचाने में सहयोगी बनें। आपसे एक सत्यार्थ प्रकाश के लिए 20/- रुपये का सहयोग अपेक्षित है। अतः अपनी इच्छानुसार अधिकाधिक प्रतियां वितरणार्थ उपलब्ध कराने के लिए सहयोग करें। आप अपनी सहयोग राशि सीधे **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' बैंक खाता सं. 910010009140900 एक्सिज बैंक**, करोल बाग IFSC : UTIB0000223 में जमा करा सकते हैं। कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री अनिरुद्ध आर्य मो. 9540040339**, **श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** अथवा **श्री सन्दीप आर्य मो. 9650183339** को पर सूचित करके आपना नाम-पता नोट करा दें ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसदेश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी। **सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।** *– महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

प्रभु की परिचर्या करें

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। -ऋ. 10/121/2
ऋषिः हिरण्यगर्भः प्राजातत्यः।। देवता-कः।। छन्दः निचृत्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ-यः आत्मदाः=जो आत्मस्वरूप को देनेवाला और **बलदाः**=शक्ति को देनेवाला है, **यस्य विश्व उपासते**=सब जिसकी उपासना करते हैं और **यस्य देवाः प्रशिषं उपासते**=देव भी जिसके प्रशासन के आश्रित हैं-जिसकी सर्वोच्च आज्ञा में चलते हैं, **यस्य छाया अमृतम्**=जिसकी शरण या आश्रय पाना अमर होना है और **यस्य मृत्युः**=जिसकी दूरी (जिससे दूर होना ही) मृत्यु है **कस्मै देवाय**=उस 'क' (सुखस्वरूप) देव का हम **हविषा विधेम** = आत्मत्याग द्वारा पूजन करते हैं।

विनय-आओ, हम अपना सर्वार्पण करके भी उस सुखस्वरूप देव की पूजा करें जो हमारे आत्मस्वरूप का देनेवाला है। हम अपने-आप-(आत्म)-को ही भूलकर भटक रहे हैं। वह हमें इस अपने-आपको प्राप्त करा देता है। वही हमें बल भी देता है; अपने को खोकर, आत्मशक्तिहीन हुए हम लोगों को वही अपनी करुणा से शक्ति भी प्रदान करता जाता है और जब हम उस सब शक्ति के भण्डार को कुछ अनुभव करने लगते हैं तो हम देखते हैं कि यह सब विश्व उसके आश्रित है, सब प्राणियों को सब-कुछ देनेवाला वही है, सब प्राणी उसी के प्रकृष्ट शासन में रह रहे हैं। जाने या अनजाने सब उसी का आश्रय ग्रहण कर रहे हैं। उसके परिपूर्ण शासन का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। उसके नियम अटल हैं। संसार में जो बड़ी-से-बड़ी शक्तियाँ (देव) काम करती दिखाई दे रही हैं, वे सब उसी की आज्ञा का पालन कर रही हैं। उसी की प्रेरणा से प्रेरित पृथिवी, सूर्य, वायु, अग्नि आदि सब देव अपने-अपने महान् कार्य ठीक-ठीक चला रहे हैं। ऋषि देखते हैं कि मृत्यु भी उसी के भय से उसकी आज्ञा में दौड़ता फिर रहा है। अहो! इस मौत से तो यह सम्पूर्ण संसार ही डरता है। सचमुच इस जगत् में जहाँ सुख-भोग हैं, वहाँ इन्हें क्षणिक बनानेवाला दुःख-सन्ताप भी है और कोई भी ऐसा जन्म पानेवाला नहीं है जो मृत्यु जो मृत्यु का ग्रास न होता हो। देखो, यह ''राम की चक्की'' संसार में ऐसी चल रही है कि इसमें सब पिसते जा रहे हैं, मरते जा रहे हैं। इस मृत्यु के विकराल कालचक्र को चलानेवाला इसका शासक भी वही है। सब संसार दुःख-पीड़ित और मौत का मारा हुआ पड़ा है। हे मनुष्यो! यदि तुम उसकी इस विकराल भयरूपिणी मृत्युदेवी से घबरा चुके हो तो यह भी आश्चर्य देखो कि जब मनुष्य उस प्रभु की शरण में आ जाता है तो यही मृत्यु नहीं रहती! आत्मस्वरूप को देकर वह हमें क्षण में अमर कर देता है। आओ, हम उस आत्मस्वरूप को देनेवाले की शरण में आकर अमर बन जाएँ, उसी से बल की याचना करें जिससे कि हम सदा उसकी छाया में ही सुख से रहने में कृतकार्य हो जाएँ।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धर्म और क्रान्ति के अग्रदूत स्वामी श्रद्धानन्द

अपना धन अपनी सम्पत्ति यहाँ तक कि अपनी संतान को भी को राष्ट्र के लिए दान करने वाले वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी से भला कौन परिचित नहीं होगा! यदि कोई नहीं है तो उसे सुन लेना होगा क्योंकि इतिहास में ऐसे उदाहरण विरले ही कभी पैदा होते हैं। जब हजारों सालों की गुलामी में लिपटा भारत इस गुलामी को अपना भाग्य समझने लगा था। जब भारतीयों की चेतना भी गुलामी की जंजीर में इस तरह जकड़ दी गयी थी कि लोग आजादी के सूरज की बात करना भी किसी चमत्कार की तरह मानते थे। ऐसे समय में इस भारत में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के नेतृत्व में धर्म और देश को बचाने का एक आन्दोलन खड़ा हुआ जिसे लोगों ने आर्य समाज के नाम से जाना। इसी आन्दोलन के सिपाही भारत माँ के एक लाल का नाम था स्वामी श्रद्धानंद जिसने स्वामी दयानन्द जी महाराज से प्रेरणा लेकर आजादी की मशाल लेकर चल निकला गुलामी के घनघोर अँधेरे में आजादी का पथ खोजने। तब गाँधी जी ने कहा था कि आर्यसमाज हिमालय से टकरा रहा है। वो हिमालय था कई हजार साल का पाखंड और हजारों साल की गुलामी। लेकिन चट्टानों से ज्यादा आर्य समाज के हौसले कहीं ज्यादा बुलंद निकले।

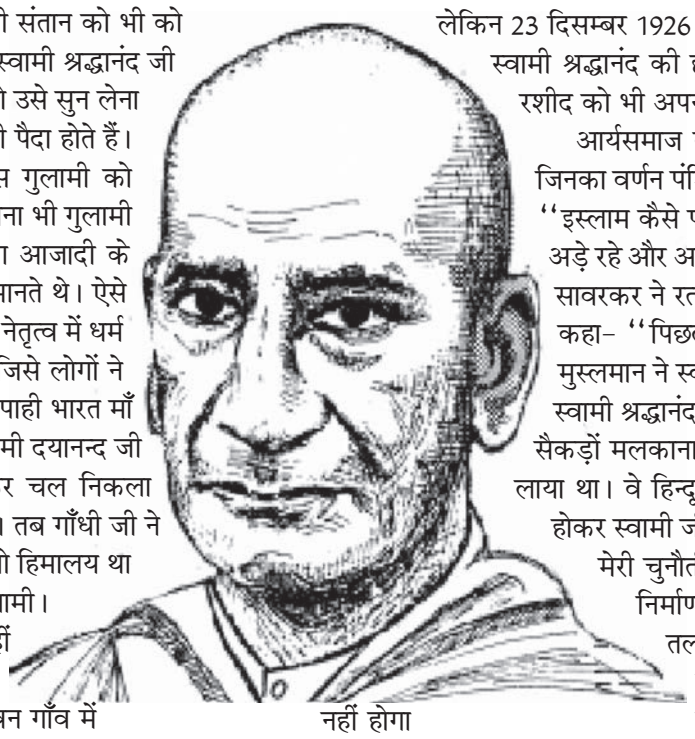

सन् 1856 में पंजाब के जालंधर जिले के तलवन गाँव में जन्मे मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के निराशापूर्ण जीवन में आशा की क्षीण प्रकार रेखा उस समय उदय हुई, जब बरेली में उन्हें स्वामी दयानन्द का सत्संग मिला। स्वामी जी के गरिमामय चरित्र ने उन्हें प्रभावित किया। उस समय जहाँ भारतवर्ष के अधिकतर नवयुवक सिवाय खाने-पीने, भोगने और उसके लिए धनसंचय करने के अलावा अपना कुछ और कर्त्तव्य ना समझते थे गुलामी में जन्म लेते थे और उस दासता की अवस्था को अपना भाग्य समझकर गंदगी के कीड़ों की तरह उसी में मस्त रहते थे उस समय आर्यावर्त्त की प्राचीन संस्कृति का सजीव चित्र खींचकर न केवल आर्यसंतान के अन्दर ही आत्मसम्मान का भाव उत्पन्न किया अपितु यूरोपियन विद्वानों को भी उनकी कल्पनाओं की असारता दिखाकर चक्कर में डाल दिया। जिस समय लोग राजनैतिक और धार्मिक दासता का शिकार थे। जिस समय लोग दुर्व्यसनों में लीन थे उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लोगों को आत्मचिंतन, राष्ट्रचिन्तन करना सिखाया। स्वामी जी के एक-एक कथन क्रांतिकारियों के लिए गीता बनते चले गये।

देश को राजनैतिक परतंत्रता से मुक्त कर स्वामी जी का उद्देश्य धार्मिक था। ताकि हम धार्मिक रूप से भी स्वतंत्र हों, हिन्दू समाज में समानता उनका लक्ष्य था। जातिवाद, छुआछूत को दूर कर शिक्षा एवं नारी जाति में जागरण कर वह एक महान समाज की स्थापना करना चाहते थे। जो कि गुलाम भारत में बहुत कठिन काम था। छोटे बड़े छूत-अछूत का भाव लोग वानरी के मृत बच्चे की तरह चिपकाए घूम रहे थे। 11 फरवरी 1923 को भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना करते समय स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा शुद्धि आंदोलन आरम्भ किया गया। स्वामी जी द्वारा इस अवसर पर कहा गया कि जिस धार्मिक अधिकार से मुसलमानों को तब्लीग और तंजीम का हक है उसी अधिकार से उन्हें अपने बिछुड़े भाइयों को वापस अपने घरों में लौटाने का हक हैं। आर्य समाज ने 1923 के अंत तक 30 हजार मलकानों को शुद्ध कर दिया। लेकिन 23 दिसम्बर 1926 को शुद्धि कार्य से रुष्ट होकर मुसलमानों ने स्वामी श्रद्धानंद की हत्या कर दी तो गाँधी जी ने हत्यारे अब्दुल रशीद को भी अपना भाई बताया।

आर्यसमाज की ओर से इस सम्बन्ध में पत्र लिखे गए, जिनका वर्णन पंडित अयोध्याय प्रसाद जी बी.ए. द्वारा लिखित ''इस्लाम कैसे फैला'' में किया गया है पर गाँधी जी हठ पर अड़े रहे और अहिंसा की अपनी परिभाषा बनाते रहे। जबकि सावरकर ने रत्नागिरि के विट्ठल मंदिर में हुई शोक सभा में कहा- ''पिछले दिन, अब्दुल रशीद नामक एक धर्मांध मुस्लमान ने स्वामी जी के घर जाकर उनकी हत्या कर दी। स्वामी श्रद्धानंद जी हिन्दू समाज के आधार स्तम्भ थे। उन्होंने सैकड़ों मलकाना राजपूतों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में लाया था। वे हिन्दू सभा के अध्यक्ष थे। यदि कोई घमण्ड में होकर स्वामी जी के जाने से सारा हिन्दुत्व नष्ट होगा, तो उसे मेरी चुनौती है। जिस भारत माता ने एक श्रद्धानंद का निर्माण किया, उसके रक्त की एक बूंद से लाखों तलवारें तथा तोपें हिन्दू धर्म को विचलित कर न सकी, वह एक श्रद्धानंद की हत्या से नष्ट नहीं होगा बल्कि अधिक पनपेगा।

''संन्यासी की हत्या का स्मरण रखो'' लेख में सावरकर ने लिखा- हिन्दू जाति के पतन से दिन रात तिलमिलाने वाले हे महाभाग संन्यासी। तुम्हारा परमपावन रक्त बहाकर तुमने हम हिंदुओं को संजीवनी दी हैं। तुम्हारा यह ऋण हिन्दू जाति आमरण न भूल सकेगी। हुतात्मा की राख से अधिक शक्तिशाली इस संसार में अन्य कोई होगा क्या? वही भस्म हे हिंदुओं! फिर से अपने भाल पर लगाकर संगठन और शुद्धि का प्रचार और प्रसार करो और उस वीर सन्यासी की स्मृति और प्रेरणा हम सबके हृदयों में निरंतर प्रजल्वित रहे, अपनी संपत्ति अपना परिवार, अपना जीवन और अपना सर्वस्व समाज के लिए दान करने वाले अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी को शत-शत नमन।

- ***सम्पादक***

'अब रस्ता कर दो खाली, आई फौज दयानन्द वाली'
गीत को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून
(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

airtel AIRTEL	DIAL **543211 4686559**	Idea SatTune	DIAL **56789 5021678**
BSNL E & S	SMS **BT 5021678** to **56700**	BSNL N & W	SMS **BT 804056** to **56700**
MTS	SMS **CT 10545238** to **56700**	Vodafone	SMS **BT 5021678** to **56789**
SatTune	DIAL **52222 2779051**	TATA	SMS **CT 5021678** to **543211**
MTNL	SMS **PT 5021678** to **56789**	AIRCEL	SMS **DT 804056** to **53000**
SatTune	SMS **CT 6312073** to **51234**	SatTune	DIAL **52222 5021678** to

आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर का 62 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर वैदिक मार्ग, अशोक नगर, नई दिल्ली अपना 62वां वार्षिकोत्सव दिनांक 15 से 18 दिसम्बर 2016 को महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत सामवेदीय महायज्ञ एवं महिला सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सोम देव जी(अजमेर से) होंगे व भजन श्री भानु प्रकाश जी प्रस्तुत करेंगे। *-पवन गान्धी, मन्त्री*

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न

मानव सेवार प्रतिष्ठान के तत्त्वावधान में 13 नवम्बर 2016 को चौधरी छोटूराम धर्मशाला रोहतक भवन में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। **- रामपाल शास्त्री**

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समारोह सम्पन्न

वैदिक तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों पर लिखे गये ग्रन्थों के प्रोत्साहनार्थ इस वर्ष का गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार 20 नवम्बर को संस्कृत की प्रकांड विदुषी डॉ. राजलक्ष्मी वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित हुआ जिसमें वैदिक विद्वान श्री जयदत्त उप्रेती तथा स्वामी क्रांतिवेश को सम्मानित किया गया। आर्य नेता श्री गौरीशंकर जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। *- राधेमोहन, प्रधान*

आर्यवीर दल का उद्घाटन व वार्षिकोत्सव

गुरुकुल पं. ऋषिराम आर्योपदेशक महाविद्यालय पालाक्काड, केरल के तत्त्वावधान में 25 दिसम्बर 2016 को आर्यवीर दल का उद्घाटन व वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। **- के.एम.राजन, मंत्री**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर, रेवाड़ी

प्रधान	–	प्रा.राममेहर सिंह
मन्त्री	–	प्रो धर्मवीर नम्बरदार
कोषाध्यक्ष	–	डॉ. महेन्द्र कुमार

वर चाहिए

कविता शर्मा (तलाकशुदा), 33 वर्ष, लम्बाई 5'4'', गोत्र: भारद्वाज, मुदगल, एम.ए., बी.एड. हेतु शिक्षित, सेवारत/व्यवसायी वर चाहिए। सम्पर्क करें – *- ओम प्रकाश शर्मा, दिल्ली मो. 09899996310, 09999354995*

आर्य समाज सागरपुर एवं माता चन्नन देवी अस्पताल के तत्त्वावधान में नि:शुल्क जांच शिविर

आर्य समाज सागरपुर नई दिल्ली एवं माता चन्नन देवी अस्पताल, जनकपुरी के तत्त्वावधान में दिनांक 18 दिसम्बर 2016 प्रात: 10 बजे से पूर्णत: नि:शुल्क आंखों की जांच, रक्त चाप, ई.सी.जी., ब्लड शुगर जांच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप) होंगे। *-मान्धाता सिंह आर्य, मंत्री*

चतुर्वेदशतक पारायण सम्पन्न

आर्यसमाज चौक पटियाला का वेद प्रचार सप्ताह एवं चतुर्वेदशतक पारायण 9 से 13 नवम्बर 2016 के मध्य सम्पन्न हुआ। वैदिक प्रवक्ता के रूप में आचार्य वीरेन्द्र रत्नम एवं भजनोपदेशक पं. जगत वर्मा जी ने अपने सुमधुर भजनों से शमा बांध दी। कार्यक्रम में श्री यशपाल सिंगला, प्रधान आर्य समाज समाना, श्री राजेन्द्र वर्मा प्रधान आर्य समाज सनौर, श्री अशोक छावड़ा प्रधान आर्य समाज राजपुरा टाउन व आर्य समाज नाभा के पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। *-वेद प्रकाश तुली, मंत्री*

आवश्यकता है मैनेज़र/केयरटेकर की

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन स्कूल' धनश्री एवं बामनिया के लिए मैनेज़र/ केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आजीवन पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर मेल करें या चेयरमैन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें। *- महामन्त्री*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष — प्रेरक जीवन के धनी-स्वामी श्रद्धानन्द

एकता के भाषण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके एकता के प्रयास सदा स्मरणीय रहेंगे। चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गोरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना-चलाओ मेरे सीने पर गोलियां। स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त ही कह सकता है। शुद्धि आन्दोलन में प्राणों का खतरा मोल लेने वाले श्रद्धानन्द में अपार वीरता, दृढ़ता, साहस, सेवा बलिदान आदि भाव कूट-कूट कर भरे थे। उन्होंने आर्य संस्कृति, शिक्षा, धर्म, राजनीति, समाज सुधार, नारी शिक्षा, शुद्धि आन्दोलन आदि क्षेत्रों में नव-निर्माण की चेतना फैलाई।

उनके बलिदान पर जो श्रद्धांजलियां और उद्गार देश-विदेश से प्राप्त हुए थे। उनसे सहज ही उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्राप्त हुए थे उनसे सहज ही उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की झलक मिलती है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी ने महान स्वतन्त्रता सेनानी, किसी ने पथ-प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने सत्य श्रद्धा और दृढ़ता का रूप, किसी ने गुरुकुल शिक्षा का पुनरुद्धारक, किसी ने निर्भय सेनापति, किसी ने हिन्दु जाति का चौकीदार, किसी ने सभी का हितैषी, किसी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता का पक्षधर, किसी ने सामाजिक राष्ट्रीय सुधारक, किसी ने सेवा और त्याग की मूर्ति, किसी ने देदीप्यमान नक्षत्र, किसी ने अमर शहीद किसी ने प्रेरक गुरु आदि विशेषताओं से सम्मानित और स्मरण किया था।

प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है, जलसे-जलूस तक सिमटकर रह जाता है। कहीं रचनात्मक, प्रभावात्मक और निर्माणात्मक चेतना व ललक नज़र नहीं आ रही है। आज के जीवन और जगत के सन्दर्भों में आर्य समाज तथा उनकी विचारधारा की प्रबल आवश्यकता है। क्योंकि अन्धकार गुरुडम, पाखण्ड अधर्म आदि तेजी से बढ़ रहा है। आर्य समाज ही इन प्रश्नों का सटीक उत्तर दे सकता है। आज आर्य समाज को आवश्यकता है - प्रेरक, आदर्श, चरित्रवान्, सेवाभावी, तपस्वी, त्यागी मिशनरी भावना वाले अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, उपदेशकों, विद्वानों, पुरोहितों आदि की। इन सबका बड़ी तेजी से अभाव हो रहा है। जो हैं वे सभी अपने समाज, आश्रमों, संस्थाओं व संगठनों का रास्ता जनता को दिखा रहे हैं। दयानन्द और आर्य समाज का रास्ता दिखाने वाले कम हो रहे हैं। यह आर्य समाज के लिए महती चिन्तनीय चिन्ता होनी चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द का कथन बड़ा सटीक लगता है।

आर्य समाज को नेताओं की नहीं सेवकों की जरूरत है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि इतने स्कूल, कालेज, गुरुकुल संस्था संगठन आश्रम समाजें हैं किन्तु एक भी हंसराज, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त-लेखराम, दर्शनानन्द नहीं बन पा रहा है। यही मूल में भूल हो रही है। हम ऊपर से समाजी बन रहे हैं, अन्दर आर्य न बन पा रहे हैं।

ऐसे अवसर आते हैं हमें आत्म निरीक्षण की प्रेरणा देने के लिए। संकल्प और व्रत दुहराने के लिए। प्रेरक महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व से सेवा त्याग, उपकार भावना व विनम्रता का पाठ सीखने के लिए। श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का यही सन्दर्भ है कि हम भी देश, धर्म, जाति, संगठन संस्था व गुरु के लिए कुछ देने की, त्याग करने की भाव-भावना अपने अन्दर जागृत करें।

शोक समाचार

श्रीमती शान्तिदेवी का निधन

आर्य समाज रोहतास नगर शाहदरा की पूर्व प्रधाना माता शान्ति देवी धर्मपत्नी स्व. रामलाल शास्त्री (संस्थापक आर्य समाज रोहतास नगर) का 82 वर्ष की आयु में 26 नवम्बर 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। माता शान्ति देवी जीवनभर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगी रहीं। दिनांक 21 नवम्बर को आर्य समाज रोहतास नगर में श्रद्धांजलि सभा में श्री पंचाल जी, वैदिक विद्वान पं. शिवनारायण शास्त्री एवं आस-पास की अन्य अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

श्रीमती किरण जौली का निधन

आर्य समाज सी-3 ब्लॉक जनकपुरी की अंतरंग सभासद श्रीमती किरण जौली का 2 दिसम्बर 2016 को निधन हो गया। वे अपने पीछे दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं। श्रीमती जौली आर्य समाज की सक्रिय कार्यकत्री एवं बहुत अच्छी भजनीक थीं। उन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में भी भाग लिया था। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज सी-3 ब्लाक में 4 दिसम्बर को हुई जिसमें विभिन संस्थाओं एवं आर्यसमाज के अधिकारियों के साथ-साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उपप्रधान श्री शिवकुमार मदान जी ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 12 दिसम्बर, 2016 से रविवार 18 दिसम्बर, 2016
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 दिसम्बर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 दिसम्बर 2016

90 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

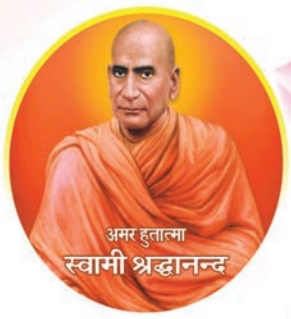

शोभायात्रा

रविवार 25 दिसंबर 2016

यज्ञ :- प्रात: 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रात: 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था वेद प्रचार मंडल उत्तर-पश्चिम दिल्ली की ओर से रहेगी।

-: निवेदक :-

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

प्रतिष्ठा में,

तिथि परिवर्तन सूचना

15 जनवरी के स्थान पर 22 जनवरी को होगा 17वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

समस्त आर्यजनों, पाठकों एवं 17वें आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सूचनार्थ है कि जनवरी, 2017 में आर्यसमाज अशोक विहार-1 में आयोजित होने वाले 17वें आर्यपरिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन की तिथियों में 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला- 7 से 15 जनवरी, 2017' के कारण परिवर्तन किया गया है। **अब यह परिचय सम्मेलन 15 जनवरी के बजाय 22 जनवरी, 2017 को आयोजित किया जाएगा।** स्थान एवं समय पूर्ववत् रहेंगे। आपको होने वाली किसी भी परेशानी के लिए आयोजक खेद प्रकट करते हैं। – ***एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

हैदराबाद राष्ट्रीय पुस्तक मेला

स्थान : एन.टी.आर. स्टेडियम, हैदराबाद (तेलंगाना)
15 दिसम्बर से 26 दिसम्बर, 2016 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें। सम्पर्क

श्री धर्मतेजा : 09848822381 रवि प्रकाश : 09650183332

आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली के 88वें वार्षिकोत्सव पर

विचार गोष्ठी सम्पन्न

आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली का 88वां वार्षिकोत्सव 1 से 4 दिसम्बर तक आयोजित किया गया। इस अवसर परअनेक कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न यूनिफोर्म सिविल कोड विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री कीर्ति शर्मा, श्री सतीश चड्ढा, श्रीमतीमोनिका अरोड़ा, डॉ. सुधीर कल्हन, डॉ. आशीष सहित अनेक महानुभावों ने अपने विचार प्रकट किए, जिसमें कहा गया कि आर्य संस्कृति लैंगिक समानता की पोषक है। – ***मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह